सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं हर परिस्थिति के प्रभाव से मुक्त रहने वाली संतुष्टमणि आत्मा हूँ।

संगमयुग पर सबसे बड़े से बड़ी स्थिति है संतुष्टता की। संतुष्ट आत्मा की स्थिति सदा प्रगतिशील रहती है। कोई भी परिस्थिति संतुष्ट आत्मा के ऊपर अपना प्रभाव डाल नहीं सकती, क्योंकि जहां संतुष्टता है वहां सर्व शक्तियां और सर्वगुण स्वत: ही आ जाते हैं। संतुष्ट आत्मा स्वयं-प्रिय, प्रभु-प्रिय और सर्व के प्रिय होती है। सदा संतुष्ट वही रह सकता है - जिसको सर्व प्राप्तियां है। परमात्मा बाप द्वारा सर्व शक्तियां, सर्वगुण, सर्व खजाने प्राप्त की हुई आत्मा सदा संतुष्ट रहती है।

योगाभ्यास - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ। मुझसे चारो ओर सर्व शक्तियों के वायब्रेशन्स फैल रहे हैं। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, सर्वशक्तिवान बाप से कम्बाइन्ड हूँ, सर्वशक्तिवान की शक्तिशाली किरणें निरंतर मुझ पर पड़ रही हैं और मैं सर्व शक्तियों से भरपूर हो रही हूँ।

बाबा के महावाक्य - मास्टर सर्वशक्तिवान वह है जो जिस समय, जिस शक्ति को आर्डर करे वह शक्ति हाज़िर हो जाए। ऐसे नहीं चाहिए सहनशक्ति और आ जावे सामना करने की शक्ति। तो शक्तियों को मास्टर सर्वशक्तिवान बन आर्डर करो और समय पर यूज़ करो।

धारणा - मन, वचन और कर्म में व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त रहना है। प्यारे बापदादा ने 15 दिन के लिए विशेष होमवर्क दिया है कि कुछ भी हो जाए... कैसी भी परिस्थिति सामने आ जाये लेकिन मन, वचन और कर्म में कम से कम 80 प्रतिशत मुक्त रहना है। संकल्प और स्वप्न में भी क्यों, क्या के प्रश्न न उठें। कितना भी हलचल हो लेकिन हमारी स्थिति अचल रहे। तो चेक करें कि कोई भी बात सामने आती है तो फुलस्टॉप लगता है या क्वेश्चन मार्क।

स्व-चेकिंग के लिए - सारा दिन संतुष्ट रहे और सर्व को संतुष्ट किया? संकल्प, वाणी और कर्म में व्यर्थ से कहां तक मुक्त रहे? त्रिकालदर्शी बन, तीनों काल को परख कर कर्म किया? मास्टर सर्वशक्तिवान बन सर्वशक्तियों को आर्डर प्रमाण चलाया? हलचल में भी अचल रहे? फुलस्टॉप लगाया या क्वेश्चनमार्क?

चिंतन - मन, वचन और कर्म में व्यर्थ से कैसे मुक्त रहें? व्यर्थ का कारण और निवारण क्या है? व्यर्थ से नुकसान क्या है? व्यर्थ से मुक्त रहने वालों की निशानियां... और इससे... फायदे क्या हैं?

साधकों के प्रति - बापदादा कुछ समय से बार-बार इशारा दे रहे हैं कि पढ़ाई का रिज़ल्ट अचानक सामने आना है.... इसलिए सदा एवररेडी। अभी समय है उड़ती कला में तीव्र पुरुषार्थ का.... ऐसे नहीं कि चल रहे हैं....साधारण रीति से अपनी दिनचर्या व्यतीत करना अब वह कॉमन पुरुषार्थ का समय गया... इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं कि हर सेकण्ड और हर संकल्प को चेक करो और स्वयं को चेंज करो।

स्वमान - मैं बापदादा का वारिस बच्चा हूँ।

हर माँ-बाप की ख्वाहिश होती है कि उनका बच्चा वारिस अर्थात योग्य बने, उन्हीं के जैसा या उनसे भी बेहतर बने, ऐसा वारिस जो उनके कार्य को आगे बढ़ाये, उनके हर सपने को पूरा करे, समाज और संसार में उनका नाम रोशन करे, हमारे अलौकिक मात-पिता बापदादा भी हमसे ऐसी ही आशा रखते हैं ना...? क्या हम अपने मात-पिता की आशाओं को पूर्ण करने वाले वारिस बच्चे नहीं बनेंगे...?

योगाभ्यास - अ. वारिस वो जो एक के लव में लीन रहे - जिस मात-पिता ने हमें अलौकिक जन्म दिया, ज्ञान रत्नों से हमारा श्रृंगार किया, हमें जीवन जीना सिखाया, इतना योग्य बनाया, हमारे सारे दु:ख दूर किये, अपना सब कुछ हम पर न्यौछावर कर दिया, ऐसे मात-पिता के लिए हम क्या न कर जाएं, स्वयं से ऐसी बातें करते हुए बाबा के प्यार में मग्न हो जायें...।

ब. वारिस वो जो छोटे बच्चे की तरह अपने सारे बोझ अपनी अलौकिक माँ को सौंपकर हल्का हो जाए...तो हम जो भी ज़िम्मेवारियों का बोझ मैं-पन व मेरे-पन के कारण ढ़ोकर चल रहे हैं, जिस स्वभाव, संस्कार, वस्तु वा व्यक्ति से परेशान हो रहे हैं, उस बोझ को बापदादा को सौंपकर हल्के रहने का अनुभव बढ़ाते चलें...।

स. वारिस वो जो मात-पिता की हर आज्ञा का पालन करे - वर्तमान आज्ञा है सेकण्ड में परमधाम में अपने अनादि स्वरूप ज्योति स्वरूप में स्थित हो जाएं, फिर सूक्ष्म वतन में अपने फरिश्ते स्वरूप में स्थित हो जाएं। क्रोध मुक्त की गिफ्ट जो शिव बाबा को दे दी है उसे पुन: वापस लेकर यूज़ न करें।

धारणा - परिवार की भावना रखने वाला (फैमिली नेचर) - शिव भगवानुवाच -''वारिस बच्चा हर कार्य में चाहे मनसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में फैमिली नेचर वाला होगा। फैमिली का अर्थ होता है एक-दो को जानना और एक-दो को समझकर चलना। तो वारिस, परिवार में भी ठीक होगा और चारो निश्चय भी उसके प्रैक्टिकल लाइफ में होंगे। वह सारे परिवार का प्यारा होगा। कोई का प्यारा और कोई का नहीं, नहीं। ''

चिन्तन - वारिस अर्थात हर श्रीमत पर चलने वाला - संकल्प, बोल, कर्म, दृष्टि, वृत्ति, व्यवहार, तन, धन, जन, दिनचर्या आदि के लिए बापदादा ने क्या-क्या श्रीमत दी है? अलग-अलग निकालें। बाबा की साकार और अव्यक्त मुरलियों से श्रीमत की माला बनायें।

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! प्यारे बापदादा को वारिस बच्चों की आवश्यकता है जो उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में पूरी तरह उतारकर सारे संसार में उन्हें प्रत्यक्ष करें। बाबा का बनकर भी हम वारिस बच्चा न बन सकें तो शायद हम खुद ही खुद को माफ नहीं कर पायेंगे। जैसे बाबा ने कहा कि वारिस अर्थात बाबा ने कहा और बच्चे ने किया। तो आओ हम सभी यह दृढ़ संकल्प करें कि बाबा आप जो भी कहेंगे, उसे मैं अवश्य पूर्ण करुंगा। आपका नम्बरवन वारिस बच्चा बनकर दिखाऊंगा।

अरबपति

- पेज 6 का शेष...

महिलाओं की सुरक्षा, स्वयं तथा विश्व के कल्याण के लिए ध्यानाभ्यास, व्यर्थ विचारों को समाप्त करना, दूसरों को प्रेरणा प्रदान करना। इसके अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति सत्कर्म के किसी अन्य विकल्प का चयन करना चाहता है तो उसके लिए भी विकल्प खुले हुए हैं।

प्रमुख उपभोक्ता

सत्कर्म के निवेश के सबसे सुरक्षित उपभोक्ता हम स्वयं ही हैं। सबसे पहले सत्कर्म के लिए ऊपर दिए गए विकल्पों में अपने इच्छानुसार सत्कर्म का चयन सुविधानुसार एक सप्ताह, मास अथवा वर्ष के लिए कर सकते हैं। चयनित किए गए सत्कर्म या सत्कर्मों को देहभान से मुक्त होकर जीवन में व्यावहारिक रूप से अपनाना आवश्यक है, तभी आपके महा अरबपति बनने की पूरी गारंटी है क्योंकि सत्कर्मों की पूंजी जमा करने का बैंक पूरे कल्प में केवल एक ही बार वर्तमान संगमयुग पर स्वयं निराकार ज्योतिर्बिन्दुस्वरुप परमात्मा शिव द्वारा स्थापित हुआ है। सत्कर्म के लिए उपभोक्ता के रूप में अन्य विकल्प जैसे परिवार, मित्र, सहकर्मी, शैक्षिक संस्थायें, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा, धार्मिक संगठनों, औद्योगिक घराने, धरती माता इत्यादि हैं। सर्वप्रथम संस्थाओं में जाकर इस महायोजना के लक्ष्य और उद्देश्य के सम्बन्ध में प्रभावशाली प्रेरक सम्बोधन द्वारा लोगों के मन में सत्कर्म के प्रति प्रेरणा उत्पन्न कीजिए। आलस्य, उदास, निराश और अहंकारी मन से सत्कर्म का कारोबार करना असम्भव है। राजयोग के अभ्यास द्वारा मन को सशक्त बनाकर सत्कर्म का कारोबार करना सुरक्षित निवेश की विधि है।

सत्कर्म की महायोजना से लाभ

इस संसार के कल्याण, सद्भावना और सहयोग के प्रकम्पन द्वारा सुखमय जीवन जीने के लिए समर्पित यह महायोजना भौतिकता की अंधी दौड़ और अज्ञानता के अंधकार में भटक रही मानवता के लिए बेहतर जीवन की संकल्पना को साकार करने का एक अवसर है जिसमें हम और आप मिलकर समाज के सभी लोगों को सत्कर्म करने के लिए प्रेरित करके स्वर्णिम विश्व के नवनिर्माण की दिशा में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं। यह वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित हो चुका है कि जब किसी स्थान में रहने वाली जनसंख्या के एक प्रतिशत लोग किसी एक विशेष संकल्प में स्थित होकर सामूहिक सोच के साथ कार्य करते हैं तो उस स्थान का वातावरण बदल जाता है। आप अपने गाँव, शहर, कार्यस्थल इत्यादि स्थानों पर इसी लक्ष्य को लेकर सत्कर्म करने के लिए लोगों को सामूहिक रूप से प्रेरित करके सकारात्मक वातावरण का नवनिर्माण करने के महापुण्य का वर्तमान में चान्स लेकर भविष्य में चान्सलर बन सकते हैं। नकारात्मक वातावरण के कारण सत्कर्म करने से वंचित आत्माओं को सत्कर्म की इस महायोजना से प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। आपका वर्तमान जीवन सुखमय, सुरक्षित और समृद्ध होगा। आपके जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के नये प्रवेश द्वार खुल जाएंगे। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी www.actsofgoodness.org पर उपलब्ध है।

-ब्र.कु.डॉ हरीन्द्र,वाराणसी

किशनगढ़। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'शिव शक्ति भवन' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर केक काटते हुए दादी रतन मोहनी, ब्र.कु. शान्ता, किशनगढ़ की महारानी मिनाक्षी देवी तथा ब्र.कु. कमलेश।

वरनाला। 'स्ट्रेस फ्री लाईफ' के ऊपर एयर फोर्स के केन्द्रीय महाविद्यालय स्कूल में ट्रेनी टीचर्स के बीच में विचार रखते हुए 7 जिलों के ए.डी.सी. एस.आर. गुप्ता, ब्र.कु. बृज, ब्र.कु. सुदर्शन तथा विद्यालय के सक्रेट्री।

वड़ौदा। ग्लोबल हॉस्पिटल की 21वीं सालगिरह पर संबोधित करते हुए उपाध्यक्ष ब्र.कु. डॉ. सतीश। साथ हैं ब्र.कु. भगवान, ब्र.कु. भगवती, ब्र.कु. राज, प्रो. चन्द्रवदन व ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ.ओ.पी. अग्रवाल।

दिल्ली। सुदर्शन टीवी चैनल के अध्यक्ष सुरेश चव्हानके को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.अदिति।

बरेली-चौपुला रोड(उ.प्र.)। 'आध्यात्मिकता द्वारा सुरक्षा' कार्यक्रम के बाद ए.डी.आर.एम. सोमेश श्रीवास्तव एवं वरिष्ठ मंडल परिचालक प्रबन्धक जवाहर राम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पार्वती।

आदर्शनगर-(उ.प्र.)। 'राजयोग द्वारा क्रोध निवारण एवं सकारात्मक चिन्तन से सफल व सुरक्षित यात्रा' कार्यक्रम के बाद ब्रह्माकुमारी बहनों को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए ए.आर.टी.ओ. संजय झा।